पाठ्यपुस्तकों के बहाने

डॉ. रजनीकांत पंत

इतिहास सदा से ही विवाद का विषय रहा है। स्कूली शिक्षा में इतिहास कैसे पढ़ाया जाए यह इतिहास के प्रति दृष्टिकोण एवं पढ़ाने की पद्धति, दोनों ही दृष्टियों से, चुनौती भरा रहा है। यह लेख एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः 2005 के अनुरूप बनी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों पर एक टिप्पणी है।

रशीदा, तुषार, नेइनुओ, जसपाल, हरप्रीत, मेरी, शंकरन, अनघा, रौशन, प्रभाकर, जागिनी, अरविन्द और मरूतसामि, ये और ऐसे अनेक ढेर सारे बच्चे मेरी नजर में भाग्यशाली हैं। हालांकि ये लोग एक-दूसरे से कई मामलों में अलग हैं - ये हिन्दुस्तान के अलग-अलग इलाकों के हैं, उनके धर्म, इनकी भाषा, इनके रीति-रिवाज और तो और इनके परिवार की माली हालात - सब कुछ अलग-अलग हैं। अगर इन सब में कोई एक बात समान है तो वह है, ये सब कक्षा 6 के विद्यार्थी हैं और उन्हें सही तरह से इतिहास पढ़ने को मिल रहा है।

यूं तो मैं भाग्य जैसी अवधारणा को नहीं मानता हूं। मैं तो कर्म को ही प्रधान मानता हूं । फिर भी मैं इन बच्चों को भाग्यशाली इसलिए कह रहा हूं क्योंकि इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते मैं इतिहास की किताबों की पढ़ाई-लिखाई से वाकिफ हूं और पहले की किताबें और इन किताबों की तुलना कर सकता हूं और अन्तर महसूस कर सकता हूं। मेरे समक्ष राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा रचित इतिहास की पुस्तकें - हमारे अतीत -1 (कक्षा-6), भारत और समकालीन विश्व - 1 (कक्षा - 9) और विश्व इतिहास के कुछ विषय (कक्षा - 11) रखीं हुई हैं। इतिहास के विद्वानों द्वारा लिखी ये पुस्तकें, इतिहास पर लिखी अन्य स्कूली पुस्तकों के साथ तुलना करने पर, साफ-साफ जमीन-आसमान के अन्तर को दर्शा जाती हैं।

हमारे स्कूल के दिनों में किताबों की बात ही और थी- तब तो हाल यह था कि अगर किसी से कहो कि इतिहास पढ़ रहे हैं तो कोई-न-कोई कह ही जाता था : ''हिस्ट्री-ज्योग्राफी बड़ी बेवफा, रात को रटो सुबह सफा।'' और हकीकत भी यही थी। तब के जमाने में इतिहास पढ़ा थोड़े ही जाता था, तब तो लोग-बाग इतिहास को रटा करते थे। अब होता तो यह है कि आप जिस रास्ते पर बार-बार रोजाना आओ जाओ वह रास्ता धीरे-धीरे आसान और अपना-सा लगने लगता है। वैसे ही रटंत विद्या से कुछ लोगों को इतिहास पसंद आने लगता। पर जब एक ही रास्ता सरल लगने लगे तब विरले ही दूसरे रास्ते को खोजने और अलग तरीकों को जानने की सोच पाते हैं। नतीजन कहानी वही ढाक के तीन पात वाली रहती।

वैसे भी, इतिहास का मतलब है आदमी के कारनामों को बयान करना और यह काम भी खुद आदमी का एक कारनामा है। ऐसे में, जरूरी नहीं है सभी इस कारनामे पर राजी हों। फिर भी, इस बयान करने वाले कारनामे के संबंध में कुछ बात याद रखनी जरूरी होती है।

अतीत से आदमी का लगाव स्वभाविक है, वैसा ही जैसे अपनी मां से सहज

लेखक परिचय :

1971 से राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास व भारतीय संस्कृति विभाग में शिक्षण कार्य में संलग्न; नेहरू अध्ययन केन्द्र के निदेशक; 'मेझंदुगारोद्नया क्निगा मास्को' के सहयोग से 6 पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद; 'प्राचीन सभ्यताओं में विज्ञान व तकनीक' पुस्तक एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख, - 'ऋग्वेद में सृष्टि की उत्पत्ति के विचारों का विकास'- शोध प्रबंध।

सम्पर्क :

13/963, मालवीय नगर, जयपुर - 302017

ढंग से प्यार करना। इस प्यार की बात करना एक बात है और ममत्व को, ममता को समझना, उसका मूल्यांकन करना दूसरी बात है। इतिहास अतीत से सहज नैसर्गिक लगाव को इतिहास- बोध में बदल सकता है ताकि वह लगाव प्रसांगिक व उपयोगी हो। अतीत से लगाव आदमी को रूढ़िवादी, पुरातन, पंथी, संकीर्ण, हताश, आत्मतुष्ट व प्रतिक्रियावादी बना देता है जबकि इतिहास-बोध उसे मुक्त, भविष्योन्मुखी, उदार, आशावान, समष्टिवादी और प्रगतिशील बनाता है। कारण स्पष्ट है, पहले में यात्रा कल से आज तक की होती है जबकि दूसरे में यात्रा कल से आज से कल तक की है। एक पीछे खींचता है तो दूसरा आगे बढ़ाता है, एक व्यवधान है तो दूसरा रास्ता व दिशा।

इसीलिए इतिहास की ये पुस्तकें उपयोगी हैं। ये न सिर्फ बच्चों की जिज्ञासा शांत करती हैं वरन उन्हें और अधिक जिज्ञासु बनाती हैं। यही शिक्षा का मकसद है कि, बच्चे जो कि स्वाभाविक रूप में जिज्ञासु होते हैं, और भी सवाल करें। यह तभी हो सकता है जब उन्हें बतलाया जाए की हर चीज का इतिहास होता है, हर घटना कुछ कारणों की उपज होती है। यह बताना गलत शिक्षा है कि जो कुछ भी है या हो रहा है वह हमेशा से था या होता रहा है, इसलिए आगे भी यही होता रहेगा। हर घटना के जन्म व विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया का ज्ञान बच्चों को प्रेरित करता है कि वे अपने आस-पास की वस्तुएं व घटनाओं के प्रति जो नजरिया रखें वह इतिहास-बोध का हो। जैसे, कक्षा 9 की पुस्तक में आए खेल-विशेषकर क्रिकेट तथा पहनावे के इतिहास नामक पाठ की ही बात लें। ये पाठ बच्चों को खेल व पहनावे के माध्यम से बहुत कुछ बतला जाता है। हमारे स्कूल के दिनों की किताबों में इतिहास महज राजा-महाराजाओं की जीवन-कथा व क्रिया कलापों और संत-महात्माओं के उपदेशों में ही सीमित था। माना वे इतिहास बना रहे थे, पर इतिहास रचना में सिर्फ वे ही तो नहीं थे। आदमी के इतिहास में यह बताना जरूरी है कि कैसे आदमी शिकार व अन्न संग्रह करते हुए आगे बढ़ा। कैसे खेती शुरू हुई, गांव फिर नगर बने। राज्य का निर्माण कैसे हुआ और कैसे राजा बने। व्यापार, विज्ञान, कला-कौशल - इन सभी के विकास की समझ बच्चों को दुनिया को खोजी की नजर से देखने की प्रेरणा देती है। तभी इतिहास चंद महान लोगों की चर्चा से बढ़कर हम सब की, समाज के हर वर्ग के लोगों की कहानी बन जाता है। यह बात तब और मायने रखती है जब कक्षा 6 की किताब में ही यह बच्चों को बतला दिया गया है कि इतिहासकार कैसे अतीत को खोजता है और हर पाठ में आए अभ्यास उन्हें खोजी दृष्टिकोण अपनाने के लिए उकसाते हैं।

मोटे तौर से इतिहास एक बात तो निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि दुनिया में अनेक सभ्यताएं बनीं और नष्ट हुईं, राज्यवंश आए और गए। सब नष्ट हुआ पर विकास जो हुआ वह हुआ आदमी का। वो आदमी जो पेड़ों या गुफाओं में रहने को मजबूर था और आज पृथ्वी छोड़ दूसरे ग्रह में बसने को आतुर है। वह आदमी जो पहले प्रकृति का दास था आज अपनी मनपंसद की प्रकृति बनाने की क्षमता रखता है। यह आदमी किसी एक विशेष देश, नस्ल, रंग-रूप या धर्म का नहीं है - यह सभी जगह का है। याने यह आम आदमी है जो विकसित हो रहा है। तब इतिहास की समझ संकीर्ण दृष्टि के स्थान पर विश्व दृष्टिकोण अपनाने को कहती है। तब पता चलता है कि किस प्रकार विध्वंस पर निर्माण करने की भावना की विजय होती है। कक्षा 11 की पुस्तक में यायावर साम्राज्य नामक पाठ इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है जो मंगोलों के प्रति अभी तक के प्रचलित दृष्टिकोण को दूसरी तरह से पेश करता है। अपने कबीले और फिर मंगोलिया के लिए दुनियाभर की नायाब चीजें लाने हेतु चंगेज खान और उसके साथियों ने जो बर्बरता की, उसी तरह की बर्बरता अमेरिका को उपनिवेश बनाते वक्त यूरोप के राज्यों ने की थी। वही बर्बरता अफ्रीका, भारत और चीन में की गई। इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है। ऐसे में सिर्फ मंगोलों, शकों, हूणों को बर्बर कहना कितना सही है, यह सवाल उठाना जरूरी है। यहां मुझे 'हम करें तो ठीक, वे करें तो गलत' कथन याद आता है। इसी सोच को अपनाते हुए यूरोपवासियों ने उपनिवेश बनाने में अपनी बर्बरता को तो नकार दिया और दावा किया कि वे एशिया, अफ्रीका के लोगों को सभ्य बना रहे हैं, कि यह गोरी चमड़ी वालों का बोझ है जिसे वे लादने के लिए अभिशप्त हैं और दूसरी तरफ एशियाई मंगोलों को लानत-मानत दिया जाता है। दरअसल, सारा मसला अपनाए गए नजरिया का है। यह नजरिया ही सब कुछ को उल्टा-सीधा कर डालता है।

अब जैसे देखिए तमाम दुनिया में नदियां उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं। इसीलिए नक्शे में उत्तर ऊपर रखा जाता है दक्षिण नीचे। हां, चंद नदियां जरूर हैं जिनका बहाव उल्टा होता है, ('क्या यह कहना सही होगा ?') ऐसी ही एक नदी नील नदी है - मिस्र की एक मात्र नदी - जो दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। इसीलिए प्राचीन मिस्र के लोगों के लिए दक्षिण दिशा शुभ मानी जाती रही है क्योंकि यह ऊपर उठने, तरक्की पाने को दर्शाती है जबकि भारत समेत अनेक सभ्यताओं में दक्षिण दिशा अशुभ, पतन का सूचक बनी रही। लेकिन, जब पूरी दुनिया ही गोल है तो क्या उत्तर, क्या दक्षिण और क्या शुभ, क्या अशुभ। इस तरह से सोचना जिन्दगी में कोई जरूरी नहीं है। जरूरी है उस जमीन को जानना जिस पर हम खड़े हैं और उस दिशा को जिधर हम देख रहे हैं। जरूरी है उस वर्तमान को जानना जिसकी बुनियाद गुजरे कल में रखी गई थी और जरूरी है वह मंजिल, हमारा आने वाला कल जिधर हमारी दृष्टि है। इतिहास तभी प्रासंगिक होगा जब हम सही जमीन व सही दिशा तलाशेंगे। यही इतिहास-बोध है और इस बात को ये किताबें पूरी करती हैं।

वस्तुतः इतिहास लेखन का पहला महत्त्वपूर्ण कार्य होता है

अतीत के तथ्यों का चयन। इस चुनाव में उद्देश्य अन्तर्निहित है। स्पष्ट है उद्देश्य होना चाहिए, ऐसे तत्वों को महत्त्व देना जो आने वाले कल की रचना हेतु आवश्यक हों, गुजरे कल के इन तत्वों की पुनः स्थापना से ही देश में शान्ति, समृद्धि व भाईचारे की पुनःस्थापना हो सकती है। सैन्यवादी जापान का एक सूत्र था 'युद्ध क्लास-रूम से जीता जाता है' और इसने अन्ततः इसी सैन्यवादी जापान को हीरोशिमा, नागासाकी के विध्वंस में फांस कर समाप्त कर दिया। जरूरत है हमें 'शान्ति क्लास-रूम से स्थापित करने की'।

इतिहास आदमी के कारनामों की कहानी है। और आदमी अच्छा भी होता है, बुरा भी, खरा भी और खोटा भी। ऐसे में बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दी जाए यह सबसे बड़ी बात है। बच्चे अच्छी बातें सीखें इसी ख्याल से उन्हें महान लोगों के कारनामों से परिचित कराया जाता है। बच्चे हमेशा नायक-पूजा करते हैं और उन्हें आदर्श बना अनुकरण करने का तैयार रहते हैं। यह इतिहास-बोध ही है जो हमें सदैव सतर्क करता है कि हम नायक को मनुष्य ही बनाए रखें, न कि देवता। ऐसा मनुष्य जो परिस्थितियों की उपज है। अभिजात्य व देवत्व की श्रेणी पर पहुंचे नायक की भूलें हमेशा अक्षय मान ली जाती हैं। पर हाड मांस का नायक अधिक अनुकरणीय हो जाता है।

अक्सर, यूरोप के इतिहास की तर्ज में हमारे भारत में भी पुनः जागरण काल के आरंभ होने का दावा किया जाता है। इस पुनः जागरण काल की भावना मानववाद रही। जन्म व जाति के दंश से आज भी ग्रसित भारत को इस पुनः जागरण का इंतजार है। विश्व के परिप्रेक्ष्य में भारत के इतिहास को बताने वाली ये पुस्तकें इस पुनः जागरण युग को साकार करने में सहायक होंगी ऐसी मेरी मान्यता है। ◆

इतिहास-बोध

इतिहास-बोध और ऐतिहासिक दृष्टि का विश्लेषण और उनके अलग-अलग पक्षों पर विचार करते समय एक साथ अनेक प्रश्न उठते हैं :

इतिहास क्या है ?

इतिहास क्यों?

अब इतिहास कैसे लिखा जाए ?

ये प्रश्न नये नहीं हैं। ये प्रश्न जरूरी भी हैं। इन्होंने इतिहासकारों की प्रायः सभी पीढ़ियों को उद्वेलित किया है, किन्तु उनके समाधानकारक उत्तर अभी तक नहीं मिले। जीवन के बदलते संदर्भों ने इन प्रश्नों को एक नया स्वरूप और नयी तीक्ष्णता दी है। इतिहास की पुरानी व्याख्याएं और इतिहास-भूमि का पुराना परिसीमन धीरे-धीरे अपना अर्थ और मूल्य खोते जा रहे हैं। इतिहास-बोध और उससे जुड़े तमाम सवालों पर पुनर्विचार आज की आवश्यकता बन गया है। मिथक चेतना से इतिहास चेतना की लंबी यात्रा अभी पूरी नहीं हुई। ऐतिहासिक चिंतन और इतिहास-लेखन की प्रक्रिया में अनेक नये मिथकों ने जन्म लिया है। विपरीत उद्दश्यों और भ्रांतियों का जो घना कोहरा इतिहास पर छा गया था, वह अभी भी पूरी तरह हटा नहीं है। जिस विकल्प की तलाश आज हो रही है, वह इन मिथकों को निर्मूल करना चाहता है, कोहरे को हटाना चाहता है। नई इतिहास-दृष्टि अब विशिष्ट से सामान्य की ओर जा रही है। भू-खंडों से जुड़े काल खंडों का इतिहास निरुपयोगी नहीं हुआ है, किंतु समन्वित, एकीकृत और समग्र मानव इतिहास की जरूरत को बड़ी शिद्दत से महसूस किया जा रहा है। ऐतिहासिक चिंतन की दार्शनिक भावभूमि बदल रही है और ऐतिहासिक विश्लेषण का आधार क्रमशः विस्तारित हो रहा है। बिना अपना स्वतंत्र स्वरूप बदले इतिहास समानधर्मी अनुशासनों की ऊर्जा से सार्थक रूप से प्रभावित हो रहा है और उन्हें भी प्रभावित कर रहा है। ये प्रवृत्तियां स्वस्थ हैं और उनमें एक आशाप्रद भविष्य का संकेत निहित है।

- श्यामाचरण दुबे

'समय और संस्कृति' से साभार